

In House Publication of Sanjay Gandhi Postgraduate Institute of Medical Sciences, Lucknow; Vol.-XII; Issue 3, July-September; 2021

26th Convocation SGPGIMS: Graced by Hon'ble President of India, Shri Ram Nath Kovind as the Chief guest

Convocation ceremony marks the culmination of education. For all those who receive degrees, diplomas or awards it is a poignant ceremony. 26th Convocation of SGPGI was a specially memorable and proud day for the students, their families and teachers as the Chief Guest was none other than the Hon ble President of India *Shri Ram Nath Kovind ji*.

Hon ble *Smt. Anandiben Patel ji*, Governor, Uttar Pradesh and Visitor SGPGI presided over the function.

The function was also graced by *Hon'ble Smt. Savita Kovind ji* the first lady .

The Convocation ceremony was held in Shruti auditorium on 27^{th} of August, in hybrid mode ,keeping in mind Covid 19



protocol. Only senior faculty members were invited physically along with the various dignitaries who graced the occasion, and degree and award recipients. Rest of the faculty members, Institute office bearers and degree recipients' family members joined via video conferencing. After the arrival of the academic procession with traditional grandeur, every one rose to the National anthem. This was followed by customary lamp lighting and invoking the blessings of Ma Saraswati, the goddess of learning. The Hon ble Governor Smt. Anandiban Patelji declared the convocation formally open.

Shri R K Tiwari, Chief Secretary, Government of Uttar Pradesh and President, SGPGI welcomed the distinguished guests. Director, **Professor R K Dhiman** presented the progress report of the institute.

This was followed by felicitation of the dignitaries. **Prof SR Naik Award , Prof S S Agarwal Award** and **Prof R K Sharma Award** were conferred upon deserving winners by the Hon ble President Of India . Smt Anandiben Patelji addressed the learned gathering .She congratulated award winners and recipients of degrees and said that they should never lose humanitarian touch as they have a social responsibility towards mankind.

The Chief Guest, Hon ble Shri Ram Nath Kovind ji blessed the students with his inspiring and kind words. State minister for medical education, Technical education and Finance *Shri Sandeep Singh ji* proposed the vote of thanks.

Cabinet minister for medical education, finance and parliamentary affairs *Shri Suresh Khanna Ji* was also present on the occasion.

Successful students were awarded their degrees by the Director, Professor R K Dhiman and the Dean, *Professor Aneesh Srivastava*

Convocation

Hon'ble President of India, Shri Ram Nath Kovind addressed the gathering with words of guidance and encouragement, coming from deep experience and wisdom. Excerpts from his speech :

Congratulations to all degree recipients. Hope that each one of you will use your knowledge to be an angel of healthcare for our country. I especially congratulate the lady doctors who got degrees today.

SGPGI, a State of the art 'medical centre and a campus with excellent landscaping ,was set up far from Lucknow city but with increasing development, it is now within city limits. However, buildings and equipment alone do not make an Institute great. Patient care, Training and Research are the 3 pillars on which an Institute stands. SGPGI has emerged as a pioneer in Superspeciality Medicine. In less than 4 decades SGPGI has met its motto of serving ailing humanity. It boasts of 5th place in NIRF ranking. The Organ transplant program is worthy of special praise. Renal transplant and Dialysis services were available here when they were rare outside the Metro cities.

As the world continues to grapple with the COVID pandemic, the Government of Uttar Pradesh has supported dedicated facilities like Rajdhani Corona Hospital. SGPGI Microbiology lab has tested more than 20 lakh samples across 30 districts.

Doctors and paramedical staff took great risks and even sacrificed their own lives in this pandemic. The fight is far from over. Masks, Social distancing and Vaccination are our most important tools in this fight.

Indigenous COVID vaccines have been developed by Indian scientists as part of Atmanirbhar Bharat. India has been a forerunner amongst countries in vaccination. 61 Crore Indians have been vaccinated. In Uttar Pradesh alone 6 crore 70 lakh people have received the vaccine till date .

SGPGI is a pioneer in Telemedicine facility. The Chief Minister of Uttar Pradesh has announced setting up of Medical colleges in every district to take healthcare available to each resident of the state. SGPGI should hold their hands and lead them till they can stand on their own feet.

SGPGI LUCKNOW : CONVOCATION - AUGUST 27, 2021 Awardees : Excellence in Academics and Research

Prof. S.R. Naik Award (Outstanding Research Investigator)



Prof. Gauray Agarwal (Endocrine Surgery)

Prof. S.S. Agarwal Award (Excellence in Research)



Mr. Sangam Rajak (Endocrinology)

Prof. R.K. Sharma Award (The Best DM Student)



Dr. Pankti Mehta (Clinical Immunology)

Prof. R.K. Sharma Award (The Best MCh Student)



Dr. Shitangsu Kakoti (Urology)

15 अगस्त 2021

संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान में देश का 75वां स्वतंत्रता दिवस पूरे उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। निदेशक डॉक्टर राधा कष्ण धीमन ने परंपरागत तरीके से ध्वजा रोहण किया। राष्ट्रगान के पश्चात् उपस्थित संकाय सदस्यों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा की स्वतंत्रतादिवस मनाने का आशय यह है कि हम उन सभी शहीदों को हृदय से याद करें, जिनके कारण आज हम स्वतंत्र हैं। साथ ही उन सभी जवानों को हृदय से धन्यवाद दें जो सीमा पर तैनात हैं उन्होंने टोकियो ओलंपिक का जिक्र करते हुए कहा कि 7 पदक लेकर हम एक राष्ट्र के रूप में गौरवान्वित हुए हैं। इसी प्रकार हम सभी को संस्थान के स्तर पर अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान देना है।

उन्होंने कोरोना 19 की दोनों लहरों से लड़ने व इस पर विजय प्राप्त करने में संस्थान परिवार के हर सदस्य के योगदान की प्रशंसा की और उन्हें हृदय से धन्यवाद दिया। इस कार्यक्रम में सामाजिक दूरी बनाए रख कर कुछ सीमित संख्या में लोगों ने भाग लिया। अन्य सभी सदस्य ZOOM ______ SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter

Independence Day



मीटिंग द्वारा इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

निदेशक महोदय ने गत डेढ़ वर्ष की उपलब्धियों का विवरण किया, जिसमें रोगी सेवा, शोध और शिक्षण तीनों स्तंभों पर चर्चा की। उन्होंने कहा की स्वास्थ्य कर्मियों के कोविड संक्रमित होने पर HCW सर्विलांस समिति का बड़ा उत्तम प्रबंधन रहा। माइक्रोबायोलॉजी विभाग ने लगभग 20 लाख RTPCR टेस्ट किये, जो प्रशंसनीय है।

साथ साथ गैर कोविड क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य हुआ। उन्होंने कहा कि आज हम कोविड 19 की तीसरी लहर के लिए भी पूरी तरह से तैयार हैं। सीसीएम विभाग की अध्यक्ष डॉक्टर बनानी पोद्दार और पीडियाट्रिक न्यूनेटालॉजी विभाग की अध्यक्ष डॉक्टर कीर्ति के सहयोग से 100 बिस्तरों के पीडियाट्रिक आईसीयू की व्यवस्था भी की जा रही है। पिछले 8 महीने से चल रही टीका करण मुहिम भी प्रशंसनीय है। शोध के क्षेत्र में उन्होंने संकाय सदस्यों और रेजीडेंट चिकित्सकों को बधाई दी और बताया कि अभी तक 6000 शोध पत्रो का प्रकाशन हुआ है।

उन्होने संस्थान की एक और बड़ी पहल का उल्लेख किया और बताया कि 1 सितंबर से फाइलों के त्वरित निस्तारण और उनके उचित प्रबंधन के लिए e ऑफिस का प्रारंभ किया जाएगा, जिसके लिए सारी तैयारियां की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि स्टाफ अपना पूरा सहयोग और समर्थन दे, इसके लिए उनके कार्य करने का वातावरण भी सौहार्द पूर्ण होना चाहिए। अतः उनके लिये किये गये संवर्ग पुनर्गठन में भी कई प्रयासों के बाद सफलता मिली है और लगभग 15 संवर्गो के लिए पुनर्गठन की प्रक्रिया पूरी हो गई है। शेष बचे संवर्ग का पुनर्गठन भी शीघ्र ही किया जाएगा। स्टाफ के लिए नई भर्ती की प्रक्रिया भी चल रही है।

निदेशक महोदय ने कई मेमोरेंडम ऑफ अंडर स्टैंडिंग का भी जिक्र किया जिसमें Telemedicine, SGPGI के द्वारा शुरू किए गए Tele ICU Project भी शामिल हैं, जिसके द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य के पुराने छह मेडिकल कॉलेज आगरा, झांसी, कानपुर, गोरखपुर, मेरठ और लखनऊ को आईसीयू केयर के लिए टेलिमेडिसिन के द्वारा जोड़ा जाएगा। उन्होंने किडनी

प्रत्यारोपण के लिए रोबोटिक सर्जरी की तरह अन्य विभागों में रोबोटिक सर्जरी को आरंभ करने आश्वासन दिया। का उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार ने डिपार्टमेंट ऑफ जेनेटिक्स को 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर रेयर जेनेटिक्स डिजीज' के लिए एक्नॉलेज किया है। यह संस्थान के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। निदेशक महोदय ने बताया कि इस वर्ष नवम्बर तक इमरजैंसी मेडिसिन विभाग की भी शुरूआत हो जाएगी और



बहुत शीघ्र ही संस्थान में एडवांस डायबिटिक एंड एंडो क्राइन सेंटर और एडवांस ऑप्थल्मोलॉजी सेंटर भी कार्य करना आरंभ कर देंगे।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल महामहिम श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी के दिशा निर्देशों के अनुसार मोहनलालगंज तहसील को स्तन और सर्वाइकल कैंसर के बारे में जनजागुरूकता के लिए चिन्हित किया गया है। इस अवसर पर संस्थान के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक



डॉ गौरव अग्रवाल, संस्थान के संयुक्त निदेशक (प्रशासन), डॉ रजनी ा कुमार सिंह व अन्य संकाय सदस्य भी उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्थान के 14 कर्मठ सदस्यों को निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया। समारोह का समापन सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ।

उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित संस्थान कर्मी

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संस्थान के 14 कर्मठ सदस्यों को निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री ए के रिंह, मुख्य प्राविधिक अधिकारी, श्री डी एस रौतेला, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, सुश्री ामीम रिजवी, प्राविधिक अधिकारी, श्री दीप पौल, सहायक नर्सिंग अधीक्षका श्रीमती आा रिंह, श्री एस सी खेरूका, मेडिकल फिजीसिस्ट, श्री राजे। मिश्रा, वानिकी, श्री भ का।, केन्द्रीय लाइब्रेरी, श्री रामधनी यादव, इमर्जेंसी मेडिसिन, सुश्री जिजीमैथ्यू, सीसीएम, श्री आर सी निगम, न्यूरोलाजी, श्री सु तिल सिंह, एन्डोकिनालाजी, श्री राजितराम वर्मा, सामान्य अस्पताल, श्री रामआधार, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग अपने कार्य परिश्रम के लिए पुरस्कृत किए गए।

SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter -

SGPGI Breast & Cervical Cancer Awareness & Early Detection program (SGPGI BCCAEDP)-

A community outreach program for women's health promotion



Cancers are the second commonest cause of death in the Indian society today, and their incidence is increasing steadily. Women are vital members of the society, and their health, or lack of it, has a deep impact on health of the family, and the society as a whole. Promotion and preservation of women's health is therefore a crucial public health necessity. The two commonest cancers affecting Indian women are breast cancer and cancer of uterine cervix. Both these cancers are curable, provided these are diagnosed at an early-stage. Sadly, due to lack of awareness and public health initiatives for early-stage detection of these cancers, many women in India are diagnosed with these cancers in an advanced stage, making it difficult and expensive to treat and cure. Hence, creating awareness about these common cancers and ensuring their detection at an early-stage are need of the hour for our country.

With these objectives the SGPGI BCCAEDP was constituted with a team of professionals from diverse backgrounds. The programme was launched by the Honorable Governor of Uttar Pradesh. *Smt Anandiben Patel* on 17th September 2021 at the Raj Bhawan. She said women in general don't take care of their health in the Indian culture and cancer is one such disease which is detected in its last stages when cure is a distant reality. Professor RK Dhiman and Professor Gaurav Agarwal gave a presentation on the magnitude of cancer problem in India, warning signs with emphasis on women's cancers and the roadmap of the programme. The team members consisted of Dr Anju Rani, Dr Amrit Gupta, Dr Vinita Agrawal, Dr Namita Mohindra and Dr Shagun Misra. A screening camp for the local residents in the governor house was organised at the local dispensary and attended by 50 women who underwent a health check-up viz clinical breast examination and visual inspection with acetic acid.



Prof Gauray Agarwal further elaborated that as a part of the programme, the Tehsil of Mohanlaganj will be adopted by SGPGI for the awareness and early detection drive in women between 30 to 65 years of age. SGPGIMS, in collaboration with health authorities of Govt. of Uttar Pradesh and non-governmental organizations will reach out to these women with the objectives of creating awareness about breast and cervical cancer in women, promoting detection of these cancers at an early, curable stage, facilitating timely referral and appropriate treatment; with the ultimate *goal* of reducing cancer related deaths in Indian women. This will be carried out over a two years period.

Cost effective screening methods that is, clinical breast examination (CBE) and visual inspection with acetic acid (VIA) will be utilised. Initial six months shall be utilized for the planning, funding and training of the field workers and community health professionals. In the subsequent 12 months, the screening of the target women population of Mohanlalganj tehsil will be carried out. The final 6 months will be used to analyse data and produce the report. The Governor appreciated SGPGI in its endeavour to take this initiative of increasing awareness in rural women and promote early diagnosis of these cancers in curable stage.



SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter

महिला सशक्तिकरण गतिविधियां

गर्भ में पलते बच्चे के विकास पर भी प्रभाव पडता है। पुरूषों में खुन की कमी उनकी उत्पादकता पर प्रभाव डालती है। इसी प्रकार बच्चों में खुन की कमी होने से उनकी शारीरिक गतिविधयां बाधित होती हैं और रोग के बढ़ने पर यह उनके सीखने की क्षमता पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। अतः बच्चों को अनिवार्यता संतुलित और पोषक आहार मिलना चाहिये। पोषण अभियान के द्वारा एनिमिया मुक्त भारत का निमार्ण हमारा लक्ष्य होना चाहिये, जहां बच्चों स्त्रियों व पुरूषों सभी को पोषण प्राप्त हो व सभी का सर्वांगीण विकास हो सके। इसी उद्देश्य के साथ दूसरा व्याख्यान वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डा अंजू रानी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उनके द्वारा किशोरियों और युवतियों को मासिक धर्म के समय स्वच्छता और सफाई के विषय में जानकारी दी गयी। प्रत्येक महिला और परूष को यह समझना होगा कि महावारी स्त्री के स्वास्थ्य से संबंधित एक सामान्य एवं स्वाभाविक प्रक्रिया है। यह इंगित करता है कि एक बालिका किशोरावस्था में प्रवेश कर रही है व यह उसके प्रजननतंत्र के सामान्य विकास को भी बताता है। चुंकि रक्त संक्रमण का एक प्रभावी स्त्रोत है, अतः माहवारी के समय पूर्ण स्वच्छता का ध्यान रखना अनिवार्य है। इसमें पैड को नियमित समय अंतराल पर बदलना व उसका सही सुरक्षित निस्तारण भी शामिल है।

महिला सशक्तिकरण - इस बड़े उद्देश्य की पूर्ति के लिए समाज के सभी वर्गों के स्त्री और पुरूषों को आगे आना होगा, जिससे इस विषय में लंबे समय से चली आ रही चुप्पी को तोड़ा जा सके।

भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति सुद्रढ करने व उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में उत्तर प्रदेश की महामहिम राज्यपाल **श्रीमती** आनंदीबेन पटेल जी से प्राप्त दिशा निर्देशों के अनसार संजय गांधी रनातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान द्वारा प्रो0 विनीता अग्रवाल की अध्यक्ष्ता में महिला सशक्तिकरण समिति का गठन किया गया। इस समिति द्वारा महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य की दिशा में जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। इस दिशा में 2 अगस्त 2021 को एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया. जिसमें स्त्रियों के स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गई। ''महिलाओं में खून की कमी को रोकने हेतु समुचित पोषण'' विषय पर इम्यूनोलॉजी विभाग की अध्यक्ष ो अमिता अग्रवाल ने व्याख्यान दिया। भारत में महिलाओं में खुन की कमी आम समस्या है। यहां 58.6% बच्चे और 50.4% गर्भवती महिलाएं एनीमिया की समस्या से ग्रस्त हैं। इसका मुल कारण उचित आहार और पोषण का न मिलना है। इससे कई प्रकार के संक्रमण हो सकते हैं। कई स्थितियों में यह आनुवांशिक भी होता है। शरीर में खुन की कमी होने से व्यक्ति को कमजोरी और थकान महसूस होती है। थोड़ा सा चलने या काम करने से सांस फूलती है व चक्कर भी आते हैं। कभी-कभी व्यक्ति को सीने में दर्द और सिर दर्द भी हो सकता है।

रक्त की कमी से व्यक्ति की कार्य करने की क्षमता प्रभावित होती है। यदि गर्भवती महिलाओं में खून की कमी होती है, तो इससे

The departments of Renal Sciences (Nephrology and Urology), ably complemented by the Department of Anaesthesia added feathers in the cap of SGPGIMS, by performing ROBOTIC Kidney Transplantation and Swap Renal transplant. Both were first such surgeries in the state of Uttar pradesh

ROBOTIC Kidney transplantation

Robotic renal transplant is a recent State of the Art technique in the field of minimally invasive surgery which offers high precision to the surgeon and speedy recovery for the transplant recipients at some extra cost. This technique is extremely useful in overweight recipients. Robotic assistance provides easy access to place the transplant kidney in the abdomen with a very small incision and minimal postoperative pain as compared to the conventional transplant surgery. The incidence of fluid collection around the transplanted kidney which could occasionally be a menace is practically not seen with this technique.

The recipient was a 42-year-old female, resident of Barabanki, diagnosed with End Stage Renal Disease, under follow up with *Dr Narayan Prasad*, Professor and Head, Nephrology. She had been on maintenance hemodialysis since April 2019. Her mother agreed to be the renal donor. She underwent work up for ABO compatible renal transplant for the immunological matching, which was perfectly fit and all matching were within acceptable limits, hence the transplant was planned. After due consent from the patient for Robotic assisted Transplantation, she was taken for the procedure on 06th Aug 2021. A robust team of surgeons from the department Dr. Ansari, Dr. Uday Pratap Singh, Dr. Sanjay Sureka carried out the procedure under the guidance and leadership of Professor Aneesh Srivastava. Dr. Rajesh Ahlawat, a visiting surgeon and mentor for the event played a great role towards the successful completion of the surgery. The Anaesthesia team under the leadership of **Professor Anil** Agrawal, Professor Sanjay Dhiraaj, Professor Sandeep Sahu, Dr Divya Srivastava and Dr Rafat Shamim lent their

expertise and support ably.

The team of Nephrologists led by *Professor Narayan Prasad* was happy to see brisk urine output post transplantation, and a well settled recipient. The surgery was a huge success and the patient had a good post operative recovery. *Professor Aneesh Srivastava* has mentored transplant programs in many medical colleges and other Government Institutions of the country including AIIMS Jodhpur, Rishikesh and otherupcoming AIIMS, RML Institute and Command hospital, Lucknow.

Director, *Professor R K Dhiman* congratulated the transplant team of Urology, Nephrology, Anesthesiology and other supporting departments and enthusiastic highly skilled paramedical staff of the institute for their untiring efforts. Till date, despite Covid, More than 200 robotic surgeries have been performed in SGPGI. *Credit also goes to the nursing team led by Brother Manoj.*

SWAP RENAL TRANSPLANT

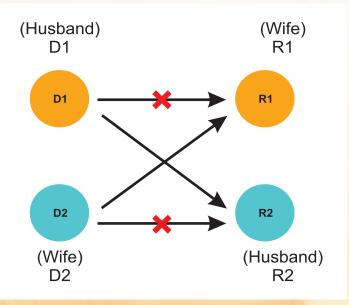
For the first time in the state of Uttar Pradesh, swap renal transplant which is also known as paired kidney exchange, was done in SGPGI, on 31st August 2021. In swap renal transplantation, the donor kidney of one pair is exchanged with another one, to make it suitable for successful transplantation. A 2-way swap transplant was done between two incompatible pairs, with two live donor transplants simultaneously. The swap donation was made legally permissible with Tissue and Human Organ Transplantation act, amendment and rule of 2014.

Mrs. C, 53 years, resident of Azamgarh, diagnosed with end stage renal disease (ESRD), was under follow up with Professor Narayan Prasad since 2018. She had been started on dialysis. Her husband Mr. J, 54 years, came forward to donate one kidney to his wife. However, on immunological matching, she had multiple high strength antibodies (Donor specific antibodies, DSA) against her husband's kidney. The crossmatch test turned out to be positive, a situation which is a contraindication for transplantation. Renal transplantat if performed will lead to severe rejection or in other words the kidney of the husband would not be accepted by the body of the wife. She did not have any other alternate kidney donors in the family.

Another ESRD, Mr R 47 years old patient, resident of Lucknow, was on dialysis since 2019. His wife Mrs. S, 40 years, willingly came forward as kidney donor. Unfortunately, he also had very high strength DSA against his wife's kidney on immunological matching. He had a strong crossmatch positive report. Detailed Immunological matching and single antigen bead test is carried out in renal lab of SGPGIMS.

The nephrology team thought of alternative ways to get the transplantation and discussed with the urology team and a decision to go ahead with swap renal transplantation was taken. Another crossmatch test after swapping the above two donors (Mrs. C with Mrs. S, and Mr. R with Mr. J) was performed which came as negative and there were no donor specific antibodies after swapping. This was explained to both the pairs, and they give their full consent for the procedure. Other parameters were also compatible and hence permission was obtained for swap transplant from Hospital Based Authorization committee, as per human organ transplant act. Transplant surgery was successfully performed by the Urology team. Dr. Aneesh Srivastava, Professor of Transplant surgery and Head, Department of Urology and Renal Transplantation was complemented by an able team consisting of Dr. Ansari, Dr. Uday Pratap Singh and Dr. Sanjay Sureka. The transplant surgery for both the pairs was executed simultaneously. Anaesthesia team joined forces to lend complete support, led by Professor Anil Agarwal, Head, Anaesthesia, Professor Sanjay Dhiraj, Dr. Divya Srivastava and Dr. Rafat Shamim. This procedure is a big leap forward in the living donor transplant program at the institute.

The paired kidney donation has several advantages. It is cost effective, does not require any desensitization techniques and the recipients have to take much lesser immunosuppression. The waiting period is significantly reduced with better graft and patient survival rates. The success rate of this better matched transplantation is always better than transplantation done after desensitization. *Professor R K Dhiman*, Director provided all the support for the simultaneous double transplantation. The teams of nephrology, urology, and anesthesia, working together, made this possible, bringing a new ray of hope for end stage renal disease patients.



SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter

Breastfeeding is Not a Choice: it's a Responsibility

World breastfeeding week (WBW) is celebrated every year from 1st to 7th August since 1992 to generate public awareness and support for breastfeeding. It was endorsed as an important breastfeeding promotion strategy by World Health Assembly in 2018. The theme for this year given by World Alliance for Breastfeeding Action (WABA) was "Protect breastfeeding : A shared responsibility". The theme emphasized on the importance of efforts and collaborations at all levels to support and protect breastfeeding, particularly in the midst of COVID-19 pandemic.

The week was celebrated in Department of Neonatology by organizing lecture sessions on various aspects related to breastfeeding for the mothers and family members of babies admitted in NICU, neonatal ward and postnatal ward. The sessions were taken by Nursing staff



and Senior Residents of the department, and each session was moderated by a faculty member.

One hour long sessions were conducted daily on topics related and relevant to breastfeeding mothers. The talks were designed so as to re emphasise the importance and benefits of breastfeeding for babies and mother's and to remove common myths often related to a lactating mother in the community. Mothers were taught and demonstrated, by way of videos and mannequin, different ways and techniques in which they can breastfeed their babies. Also, for mothers whose babies are too sick to suck from breast, they were made aware of valuable information regarding how to maintain lactation and important tips on storage of breastmilk. Finally we also had a session on human milk banking and home treatment for different problems of breast and breastfeeding.



On the last day of breastfeeding week celebration, mothers were encouraged to come up with their personal experiences

and challenges related to breastfeeding. An attempt was made to tackle them and provide them with some alternative feasible and acceptable solutions for same. Following COVID appropriate behavior, packed food boxes with healthy snacks were arranged for all the mothers of babies admitted in NICU/ Neonatal ward and in postnatal ward on the last day of WBW.



Dr Akanksha, Assistant Professor, Neonatology

माँ का दूध

यह ममता की धार है, इसमें माँ का प्यार है। इसमें नही हैं कोई मिलावट, केवल है ममता की आहट। स्तनपान है आर्शीर्वाद, दूर करे ये कई विकार। इसके दिव्य गुणों से, बच्चे को मिलता है आधार। स्तनपान हो बच्चे का पहला पानी, यह है माँ की इक मीठी निशानी। सिशु के लिए है ये अमृत समान, बच्चे की माँ से कराता पहचान। इसमें पोषण है भरपूर, छः माह तक न रखना बच्चे को इससे दूर। इसके बाद भी है ये हितकारी, नही आने देता कई बीमारी। हमको भी सीखना है, और दूसरों को भी सिखाना है। स्तनपान का महत्व, जन-जन तक पहुंचाना है। **डॉक्टर नीरज जैन, एसोसिएट प्रोफेसर, रेडियोलोजी विभाग** (स्व रचित प्रथम कृति)

SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter -

World Hepatitis Day: Vistas towards a Hepatitis free world

Every year, 28th of July is observed globally as World Hepatitis Day, a day that commemorates the birth anniversary of Nobel laureate *Baruch Samuel Blumberg*, the discoverer of the hepatitis B virus. Over the last six decades since the seminal discovery, the landscape of viral hepatitis has witnessed a sea-change with quantum leaps in the diagnosis and management of viral hepatitis. This year, the World Hepatitis Day was observed with the World Health Organizations' theme of "**Hepatitis Can't Wait**" reflecting the urgency in addressing challenges in viral hepatitis and progression to the ultimate goal of achieving a world free of hepatitis.

Conventionally and in a simplistic classification, viral hepatitis is divided into two dichotomous types: acute and chronic viral hepatitis. The common subtypes of viruses leading to viral hepatitis are Hepatitis, A, B, C, D and E. In the Indian context the key challenges involve: Hepatitis A and E which lead to acute viral hepatitis with a predominant faecooral route of transmission, while Hepatitis B and Hepatitis C, which classically lead to chronic hepatitis. Hepatitis A virus infection is common during childhood (children up to 5 years of age) in a backdrop of poor sanitation facilities. However, over the years there has been a trend towards a change in the epidemiology, with increasing incidence in adolescents and adults. The two pillars of addressing the HAV challenges remain in improving the sanitary conditions with provision of hygienic drinking water facilities and vaccination (two doses for any of the licensed vaccines which have to be given six months apart to children aged one year or older.) HEV is responsible for sporadic and epidemic outbreaks of acute viral hepatitis with an enteric transmission mode. It forms an important cause of severe liver damage (acute liver failure, ALF) associated with high mortality. HEV is also important in pregnancy, with pregnant females having a higher likelihood of being infected (12–20%) with HEV and a higher propensity to develop ALF (10–22%). In line with HAV, the predominant measures for control of HEV revolve around improvement in sanitary conditions. A rare entity with HEV is chronic HEV infection which is seen in immunosuppressed patients.

Chronic viral hepatitis due to HBV and HCV remains a foremost challenge globally. More than 354 million people globally live with chronic hepatitis, with over 8000 new infections and greater than one million deaths every year due to HBV and HCV. The predominant mode of HBV is via mucosal or percutaneous exposure to infected body fluids. The majority of patients acutely infected with HBV are asymptomatic. When the hepatitis B surface antigen persists for more than 6 months, a transition to chronic hepatitis B infection occurs. The likelihood of chronicity varies with the age of acquiring the infection, with the risk being $\geq 90\%$ in neonates and <5% in adults. The control of HBV revolves around the practices of immunization with HBV vaccine in the uninfected and treatment with antivirals in selected groups of chronic HBV infection. Hepatitis C classically leads to chronic hepatitis and has six (1-6) predominant genotypes with a region-specific difference in the most prevalent genotype. The estimated prevalence of HCV infection in India is about 1–1.9%. The predominant modes for HCV transmission remain infected blood products (before universal screening strategy), unsafe injection practices, intravenous drug use and hemodialysis. HCV management has undergone a paradigm shift with the advent of newer directly acting antivirals (DAAs) with short (12 weeks) and highly effective virological cure rates.

The World Health Organization has set a goal of global viral hepatitis elimination by 2030. Although there have been significant reductions in the global burden, achieving the goals according to current trajectories seems unlikely. The situation is bleak in the low middle-income countries (LMICs), and the advent of the COVID-19 pandemic has thwarted the elimination process. Hence, the need of the hour lies in revamping and accelerating the campaign against viral hepatitis with an increase in immunization practices and making HCV care universally accessible. July 28, 2018 marked an epoch in India's fight against viral hepatitis with the launch of the National Viral Hepatitis Control Programme (NVHCP), which provides an integrated approach towards prevention and control of viral hepatitis. The program marks a landmark event covering the entire spectrum of viral hepatitis with standard operational guidelines for effective evaluation and management of viral hepatitis. The global efforts of the WHO in conjunction with regional efforts are central towards accelerating viral hepatitis care. With such giant leaps in innovative techniques of diagnosis, newer treatment options, and a comprehensive management protocol, the horizon of viral hepatitis control appears bright, albeit with a challenging road ahead.

"Towards a future free of viral hepatitis.....

Dr. Akash Roy, Assistant Professor Department of Hepatology

From the Editorial Desk ...

The Editorial Board of the Newsletter Wishes everyone a safe and healthy festival season.

- SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter

Geriatric Helpdesk inaugurated in SGPGI

According to the Longitudinal Ageing Study in India released by the Union Ministry of Health & Family Welfare, two in every three senior citizens in India suffer from chronic disease. Non communicable diseases requiring large quantum of health and social care are extremely common in old age, irrespective of socio-economic status. The ageing population often finds itself making frequent unprecedented visits to the hospital for specialized care for their ailments. The elderly tend to suffer from psychological stress in addition to increased physical fatigue.

To address the concerns of the Geriatric population attending the OPD at SGPGIMS, Helpage India, a Non-Profit Organization, aimed at working for the cause and care of disadvantaged older persons to improve their quality of life, proposed to set up a counter in the SGPGI OPD .Subsequent to approval from *Professor R. K. Dhiman*, Director,a



Helpdesk exclusively for the Geriatric population was promulgated. The main objective of the Geriatric helpdesk is to facilitate better quality of services to the Geriatric population visiting the hospital and attempt to bridge the span between the patient and the doctor by easing the process of navigating through the initial formalities of the hospital.

On 3 September, 2021, the inaugural ceremony of the Geriatric helpdesk at the New OPD building in SGPGIMS was convened. The Inaugural Session commenced with the introductory address by *Dr. R. Harsvardhan*, Head, Hospital Administration Department. Director, *Proessor R. K. Dhiman*, inaugurated the helpdesk, marking the beginning of this comprehensive and dedicated facility at SGPGIMS.

CMS, *Professor Gaurav Agarwal*, MS, *Professor Paliwal* and *Mr. A. K. Singh*, State Head, Helpage India ,Faculty and staff members of SGPGIMS were present on the occassion .



"Taming glucagon to treat Diabetes"

Dr. Rohit A. Sinha and his team at the Department of Endocrinology have discovered a new way to control blood sugar levels in diabetics. Patients with type 2 diabetes secrete not only too little insulin but also too much glucagon, which contributes to poor blood glucose control. Glucagon like insulin is a hormone secreted by our pancreas. However, glucagon acts opposite to insulin and increase blood sugar levels in humans. After a meal, the secretion of glucagon is blocked to prevent excessive production of glucose by the liver. When this fails in diabetic patients, too much glucagon contributes to increased hepatic glucose production that exacerbates the already high blood sugar levels of diabetics. Despite this vital function of glucagon, relatively little is known about how its secretion is regulated. In a recent study with funding support from Wellcome Trust/DBT, the lab team showed how glucagon release can be reduced by inhibiting the activity of a protein called as MTORC1 in the pancreas. Inhibition of MTORC1 leads to degradation of stored

glucagon via a process known as "Crinophagy" inside structures known as lysosomes and stops glucagon secretion. This study, therefore, may lead to the development of newer drugs that would control glucagon levels in humans and manage blood sugar levels in diabetics. This work has been recently published in a prestigious international journal "Molecular Metabolism" and its invited commentary in the Journal "Autophagy".



E-office inaugurated at SGPGIMS



E-office application commenced at SGPGIMS from 01-Sep-2021. SGPGIMS is a tertiary care medical centre and a leader in using technology for transparency and accountability. This application will help make SGPGIMS working more digital and effective. e-Office application has been deployed at SGPGIMS as part of Uttar Pradesh Government digital initiative through Uttar Pradesh Electronics Corporation (Nodal agency for e-office in the State of Uttar Pradesh). The inauguration of e-office at SGPGIMS was done by *Prof R.K.Dhiman*, Director, SGPGIMS in gracious presenceof *Mr.Rishirendra Kumar*, IAS, Special Secretary, IT and Electronics and Managing Director, Uttar Pradesh Electronics Corporation Limited. Government of Uttar



Pradesh. *Prof Gaurav Agarwal*, CMS, *Prof Rajneesh K Singh*, JDA, *Prof Uttam Singh* (HOD, BHI), *Mr.Praveen Kumar*, Consultant Policy (UPLC), *Mr.Surya Kumar Patnaik*, Officer In-charge and Scientist and other dignitaries were also present on the occasion. Mr.Rishiendra Kumar assured to extend every possible help to SGPGI to run e-office application.

The salient features of e-office application:

e-office application has been designed and developed by National Informatics Centre, Government of India. The application is a digital workplace solution. SGPGI has presently enrolled 482 users in e-office system who will work



on this application. The users have been provided training by Department of Biostatistics and Health Informatics, SGPGI. No new files will be opened physically'. All letters/meeting notices, office orders, circulars will be issued and circulated on e-office.e-files and letters can be tracked and their status is known at all times. This will transform the work culture and will make most of the working paperless. The deployment of this application will help the institution to use the manpower available for more productive work.

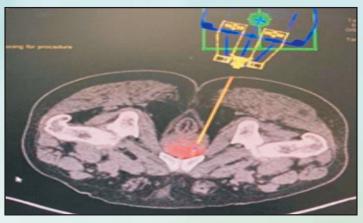
The vision is to achieve a simplified, responsive, effective and transparent working of all Departments and Sections for patient welfare and excellence through e office.

Expanding horizon of PET CT guided biopsy Strive for progress and perfection shall follow

The department of Nuclear medicine successfully conducted percutaneous trans-Gluteal PSMA PET guided biopsy for a suspected case of Ca prostate on Sep 8, 2021. It was made possible with the advanced Robio Ex CT and PET guided robotic system that enables fast and accurate tumor targeting and tool placement for various abdominal and thoracic interventions. Advantages over conventional biopsy include reduced number of needle punctures, check scans, procedure time, patient pain, radiation exposure and a better detection rate . Four PSMA PET/CT guided biopsies have been conducted in the month of September. Result of biopsy was encouraging & relevant tissue retrieved successfully.

Earlier the department has successfully conducted FDG PET/CT targeted biopsies for lung masses where conventional biopsies were inconclusive . Reason behind high positivity of FDG PET guided biopsy is that it targets only those areas in the tumor which shows high metabolic activity. The PET/CT targeted biopsy technology has been proven to have a profound impact on patient care. Several

– SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter



groups of patients could benefit. This mainly includes patents whose biopsy result shows a low-grade, non-clinically significant tumor or premalignant lesions. PET/CT targeted biopsy improves cancer detection rate, many patients would not need repeated biopsies, so the total number of prostate biopsies could be reduced. An accurate biopsy can also help to reduce patient anxiety over possible sampling error and the uncertainty associated with the conventional biopsy technique. In addition, this could also reduce the risk of lifethreatening sepsis and transrectal bleeding in prostate cancer patients. All this, could transform prostate cancer management and change current clinical practice from "blind" to "targeted" biopsy .



PET/CT-guided targeted biopsy is a promising strategy that can provide accurate histopathologic grading and cause minimal trauma and complications beyond all doubt. With this positive clinical context and encouraging results obtained from our recent expedition, our department aims to establish its new roots in interventional procedures apart from already acclaimed diagnostic and therapeutic arenas, keeping in mind the well-being and welfare of our patients.

Department of Nuclear Medicine express gratitude to department of Urology and Pathology for constant support from their side.

Life Can Begin After Death

Organ transplantation is the most preferred treatment for many of the end-stage diseases. It offers a better quality of life and has a better long-term survival benefits. The primary hindrance to the organ transplantation program worldwide is the shortage of organ donors. For many illnesses, organ transplantation represents the only Life Saving therapy and leads to a substantial improvement in the quality of life.

We are struggling with acute shortage of organs for transplantation More than a million people suffer from end stage organ failure but only a handful of 3500 Transplants are performed annually At least 15 patients die every day waiting for organs and every 10 minutes a new name is added to this waiting list.

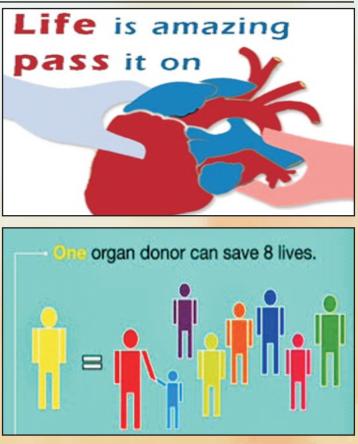
Every organ donor has potential to save 8 lives. If you are 18+ you can register to become an organ donor. Register for organ donation to become a super hero. Even after death, some organs of the body can be preserved and stored if these organs are donated it might save somebody else s life.

Saving lives is good Karma ' .

Why let go our organs to waste after cremation... let it be gifted to someone in need **So pledge for organ donation! Be a Hero for Someone.**

SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter —

Dr. Bella Jain (Resident), Dr. Aftab Hasan Nazar (Assistant Professor), Nuclear Medicine



TO REMEMBER ME - A POEM BY ROBERT N. TEST

Give my sight to the man who has never seen a sunrise, a baby's face, or love in the eyes of a woman.

Give my heart to a person whose own heart has caused nothing but endless days of pain.

Give my blood to the teenager who was pulled from the wreckage of his car so that he might live to see his grandchildren play Give my kidneys to one who depends on a machine to exist from week to week.

Take my bones, every muscle, every fiber and nerve in my body and find a way to make a crippled child walk.

If you must bury something let it be my faults my weaknesses and all prejudice against my fellow man .

Give my sins to the devil.

Give my soul to God.

If, by chance, you wish to remember me, do it with a kind deed or word to someone who needs you. If you do all I have asked, I will live forever.

Shamola Ajay Singh A.P.R.O. & Coordinator, SOTTO: State Organ and Tissue Transplant Organisation.

Webinar on 'Research Ethics'

SGPGIMS has been conducting seminars on various aspects of Medical Ethics. On 11th September 2021, a program in this series was conducted through Video conferencing on 'Research Ethics'. *Prof RK Dhiman*, Director SGPGIMS, *Prof Vinita Agrawal*, Moderator of the program and Member Secretary IEC, and *Prof Afzal Azim*, Executive Registrar welcomed the speakers and emphasized that it is important to follow ethical norms in all aspects of research.

Prof M K Mitra, Former Prof and Head, Department of Medicine, KGMU, Lucknow discussed the 'Responsibilities of Ethics Committees in Research'. He said that while reviewing a research proposal, members of the Ethics Committee do a benefit-risk assessment and should make all attempts to maximize benefit and minimize risks toparticipants.

Prof Uday C Ghoshal, Faculty In charge Research, SGPGIMS talked about the principles of Research Ethics. He emphasized that biomedical and health research should adhere to the basic ethical principles: autonomy (respect for persons), beneficence, non-maleficence and justice. He said

that these rules guide the decision making process.

Prof Shubha R Phadke, Head, Department of Medical Genetics, SGPGIMS talked about the 'Ethical Considerations in Genomic Research'. She said that communication of information by pretest and post-test counselling is extremely important. She highlighted the requirement of trained genetic counsellors and genetic counselling programs in the country.

Dr Durga P Misra, Associate Prof, Department of Clinical Immunology, SGPGIMS discussed various aspects of 'Research Misconduct'. He emphasized that it is necessary to be aware of research misconduct and authorship criteria. The researchers should transparently declare conflicts of interest and there should not be any falsification or fabrication of data. He said that the softwares available for checking of plagiarism are efficient and should be used by researchers.

The participants joined the program from within the institute and from the NMCN network. It was also streamed on YouTube.

6th July -World Zoonosis Day

The word 'Zoonosis' (pleural: Zoonoses) is made up of two Greek words, zoon- animal and noson- disease. This word was introduced by Rudolf Virchow in 1880 to designate human diseases caused by animals. Later in year 1959 WHO defined that Zoonoses are "those diseases and infections which are naturally transmitted between vertebrate animals and man". Considering direction of transmission it is further divided into anthropozoonosis ' (animals to humans), zooanthroponosis ' (animals) and amphixenosis ' (ransmitted in either direction)

World Zoonosis Day is celebrated every year on 6th July in remembrance of and honor to French Biologist Louis Pasteur

Contd on page 13



- SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter









Contd from page 12

who successfully administered the first human vaccine against rabies, a zoonotic disease on 6 July 1885. Theme of World Zoonosis Day 2021 is "Let's Break the Chain of Zoonotic Transmission" which emphasizes the world wide need of awareness against zoonotic diseases and practicing strong preventive measures to fight against.

There are more than 300 zoonotic diseases of diverse etiology. Few well known are toxoplasmosis, trypanosomiasis, leishmaniasis (protozoal) ; anthrax , brucellosis , plague , leptospirosis , salmonellosis bacterial) ; echinococcosishydatid disease, taeniasis, schistosomiasis, dracunculiasis (helminthic) ; cryptococcosis , superficial dermatophytes , ringworm (ungal) scabies ,myiasis (ectoparasitic) murine typhus ,tick typhus ,scrub typhus ,Q fever (ickettsial)and rabies Japanese encephalitis, yellow fever, influenza, Ebola, MERS, SARS, Zika (viral) with the most recent pandemic of COVID-19.

Zoonotic transmission usually occurs during contact with animals (pets, vectors, farm animals, farming & trading);



consumption of animals, animal products or animal derivatives and laboratory and research working. Individual practices of good personal hygiene and desired protection ;eating properly processed and cooked food, drinking potable water, health education and vaccination are the keys of stopping zoonotic transmissions.



United Nations Environment Programme (UNEP) and the International Livestock Research Institute (ILRI) have released a joint report "Preventing the Next Pandemic: Zoonotic diseases and how to break the chain of transmission" which identified 7human mediated factors as most likely driving the emergence of zoonotic diseases. Those are increasing human demand for animal protein ; unsustainable agricultural intensification ;increased use and exploitation of wildlife ;unsustainable utilization of natural resources accelerated by urbanization ,land use change and extractive industries ; increased travel and transportation ; changes in food supply and climate change .

The COVID-19 global crisis has made it very clear that more robust, comprehensive and coordinated prevention strategies are needed. Future prevention policies will be requiring continuous surveillance, information sharing, greater collaboration and joint action.

Dr. A. K. Baranwal Scientist 1, Animal House

AWARENESS CAMPAIGN ON ORGAN DONATION: 'Be a Miracle Maker'

State Organ & Tissue Transplant Organization- U. P. was established at the Sanjay Gandhi Post Graduate Institute of Medical Sciences (SGPGIMS) for the entire state of U.P by the Central Govt. to formalize the system of organ harvesting, banking, transplantation & other intermediary steps involved in organ transplantation. As the umbrella body of tissue transplant in Uttar Pradesh, SOTTO - U. P. mandates conduction of awareness drives & IEC activities in order to create awareness about organ donation & consequentially increase the poor organ donor rates in the State.

State Organ & Tissue Transplant Organization, Uttar Pradesh, Department of Hospital Administration, Sanjay Gandhi Post Graduate Institute of Medical Sciences, Lucknow, under the guidance of **Professor R. K. Dhiman**, Director, SGPGIMS, has taken the initiative for conducting a one-day Awareness Program & Poster Making Competition- Captioned with Slogan, on Organ & Tissue Donation: Be a Miracle Maker across the Schools of Lucknow.

The program aimed to:

- Create awareness among the youth regarding Organ & Tissue Donation
- To apprise the youth regarding benefits of organ donation
- Sensitize the youth and encourage them to hold conversations about organ donation with Parents, Relatives, Siblings & Friends

The awareness campaign on **Organ & Tissue Donation- 'Be a Miracle Maker'** was conducted online via Zoom platform at the Board Room, Director's Office, SGPGIMS every **Saturday** from 4th **September 2021 to 25th September** 2021

after 01:00 PM.

The awareness session comprised of a

- Motivational Video/Short Film
- Power Point Presentation on Organ Donation
- And an Interactive session with the students of respective school

The session was followed by the **Poster Making** Competition

The poster making competition is in 2 stages:

Stage I: An Intra-School poster making competition was conducted after the awareness campaign across schools every Saturday from **4th September 2021 to 25th September 2021** after 01:00 PM

Stage II: The participants, whose entries were selected, will

participate in the Inter-School, Stage-II of the competition, which will be organized on **09th October, 2021**.

The winners will subsequently be felicitated on the occasion of Public Forum & Awareness Program which will be organized on the occasion of Indian Organ Donation Day, at SGPGIMS.

23 Schools from across Lucknow participated in the awareness campaign & every session of the awareness campaign saw more than 400 participants who showed active interest in the cause & also whole heartedly participated in the interactive session, quenching their thirst for knowledge about organ donation.

The poster making competition received 249 entries from the students of the participating schools & the assessment of the posters was conducted on 30^{th} September 2021 by a panel of esteemed judges from across Lucknow

World Patient Safety Day, 17 September, 2021

World Patient Safety Day is firmly grounded in the fundamental principle of medicine – the Greek dictum *"primum non no cere"* which means, *"To do no Harm"*. The over all objectives of the Day are to enhance global understanding of patient safety, increase public engagement in health care safety, and promote global action to prevent and reduce avoidable harm in healthcare.

Globally, as many as 4 in 10 patients are harmed in primary and outpatient healthcare & it is well ascertained that 80% of the harm is preventable. In India ,nearly 5.2 Million people die due to inadvertent patient safety incidents which displays the glaring deficiencies in healthcare services in respect to patient safety.

In order to scale up efforts & ensure progress toward increasing patient safety in India, the Patient Safety and ADR (Adverse Drug Reactions) Monitoring Cell ,under the aegis of Department of Hospital Administration , SGPGIMS organized a Patient Safety webinar on the WHO Patient Safety theme for 2021 :Safe Maternal & New born Care- 'Act now for a safe & respectable childbirth! '

Dr. R. Harsvardhan, Head, Department of Hospital Administration, welcomed all the delegates & speakers following which **Professor Gaurav Agarwal**, CMS, SGPGIMS deliberated on what lies ahead for patient safety in India and ways of developing a positive safety culture in hospitals. Following protocols and checklists can eliminate errors in patient care and minimise mistakes. The delegates were sensitized to the importance of patient safety by audiovisual presentations.

Professor R. K. Dhiman, Director, SGPGIMS, discussed on how hospitals can play a key role in making healthcare safer, factors to consider while providing treatment to prevent unavoidable harm to patients and enhancing the quality of care. He also stressed on the importance of **Global action on patient safety** ' the resolution passed by World Health Assembly in 2019.

Dr. Harsvardhan explained the concept of Patient Safety stating how the Pareto Principle must be followed in trying to minimize the harm done to patients. Further, elaborated on the National Patient Safety Implementation Framework (NPSIF) which aims to improve patient safety at all levels of health care across all modalities of health care provision, including prevention, diagnosis, treatment and follow up within overall context of improving quality of care and progressing towards UHC (Universal Health Coverage) in coming decade in India.

Clinical Risk Assessment- concerned with improving the quality and safety of health-care services by identifying the circumstances and opportunities that put patients at risk of harm, with special reference to surgical practices in healthcare settings was deliberated over, by *Dr. Richa Lal*, Earlier Professor and Head, Pediatric Surgery. Special emphasis was given to the WHO Patient Safety Checklist its implementation. *Dr. Mandakini Pradhan*, Head, Maternal & Reproductive Health highlighted the significant burden of risks and harm women and new-borns are exposed to when receiving unsafe care during childbirth. *Dr. Anita Singh*, Additional Professor, Neonatology emphasized on the adoption of some of the best practices that can prove beneficial in preventing a voidable risks and harm to new born during child birth leading to reduction of neonatal death &

stillbirths. *Dr. Jai Prakash*, Senior Principal, Pharmaco Vigilance Program of India, discussed about the importance of reporting and monitoring of adverse drug reactions as a way towards medication safety. The program concluded with the concluding remarks by *Dr. V.K. Paliwal*, Medical Superintendent, SGPGIMS.

The main objective of the program was to accelerate the

actions necessary for ensuring safe and respectful childbirth & improve present knowledge of ADRs and Pharmacovigilance among healthcare professionals and to strengthen the trend of reporting ADRs to regional pharmaco vigilance centres. A total of 1196 delegates registered for this significant webinar on Patient Safety.

Dr SS Agarwal Memorial Lecture

Birth anniversary of **Dr SS Agarwal** was celebrated on 5^{th} July 2 0 2in the department of telemedicine .Dr SS Agarwal is the founder of medical genetics in India and is credited with initiating the DM course in the subject .He recognized the need for medical genetics in India at a time when we were still battling with communicable diseases. The online celebration was joined in by various alumni of the department and other medical professionals. The program was helmed by the head of the department **Dr S R Phadke** and was graced by the Director of institute **Dr R K Dhiman** and **Dean Dr SK Mishra**. We started with a floral and a musical tribute to Dr SS Agarwal .Dr RK Dhiman regaled the audience with his memories of Dr SS Agarwal and apprised us with the academic achievements and perspicacious nature of Dr SS Agarwal .

Dr SK Mishra was felicitated on the occasion for his services to the institute. It was his vision and conviction in the ability of telemedicine which helped to establish the infrastructure for the department of telemedicine at SGPGIMS. Dr SK Mishra spoke about the humble beginning of telemedicine at the institute and the impact of telemedicine in the times of COVID.

The guest lecture was rendered by **Dr Girisha KM**, Head of the department of medical genetics at Kasturba Medical College Manipal on the Indian contributions of disease gene discovery where he imparted an insightful discourse on the creation of the first population database of Indian origin.

Dr Somya Srivastava , SR(DM) , Medical genetics

Endocrine Surgery Foundation Day

The department of Endocrine Surgery celebrated its 32nd foundation day at Telemedicine lecture theatre .The Chief Guest was Director *,Prof RK Dhiman* who appreciated the tremendous work being done by the department . The foundation Day oration was delivered by *Prof Claudio Cernea* from Brazil He is a world renowned thyroid surgeon and has contributed significantly towards practice of safe thyroid surgery He spoke on "How to reduce morbidity after thyroidectomy *.Prof Anand K Mishra* ,who was the first MCh resident of the department *k*ountry and now heads the department at KGMU delivered a special lecture on "Why endocrine surgery is so special" .

Prof Amit Agarwal, Head of the department presented the progress of the department over 31 years and shared the landmark events over these 31 glorious years. He also mentioned how the department has progressed from scalpel/knife thyroid surgery to modern endoscopic scarless and robotic thyroid surgery Robotic surgery results in a high cosmetic satisfaction as there is no scar in the neck. There are only few centers in the entire country which are performing robotic thyroid surgery. He also shared the recent breast reconstruction techniques being done by the department for



breast cancer patients. He informed that the department was the first in the country to start MCh course in Endocrine Surgery and till date 40 residents have obtained this degree and are well settled in all the four corners of the country All the alumni are now renowned thyroid and endocrine surgeons of the country .The department trains 4 residents every year who take admission through the NEET SS examination.

This was followed by the felicitation of department faculty, senior residents and staff for their contributions towards best nursing care, patient communication skills, technical and

surgical skills and academic research.

Following were awarded for their contributions:

- 1. *Mrs. Meera Srivastava* was given **Satish Babu Best** Technician Award ".
- 2. *Mr. Hariram* was given "Mohd. Irfan Best Ward Attendant Award . "
- 3. *Mr. Rejoy Johny* was felicitated with "Shobha Charan Best Operation Theatre Nurse Award . "
- 4. Mrs. Anupama Pal was given Nair Best Ward Nursing Award . "

Dr. Mallika Danda was given Best Ward Resident Award, Dr. Vikram was given Best Surgical Skills Award "Dr. Vishwak was felicitated with "Best Research Skills Award" and Dr. Abhishek was awarded "Best patient communication skills Award."

On this occasion, a "Resident's Hand Book " was also

रेजिडेंट डॉक्टरों हेतु भोजनालय भवन व नवीन डायग्नोस्टिक ब्लॉक का लोकार्पण

संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान में नवीन डायग्नोस्टिक ब्लॉक व रेजिडेंट डॉक्टरों हेतु भोजनालय भवन का लोकार्पण किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार के चिकित्सा शिक्षा, वित्त व संसदीय मामलों के मंत्री माननीय श्री सुरेश खन्ना जी के कर कमलों द्वारा इन दोनों सुविधाओं का उद्घाटन किया गया। इसके साथ ही माननीय मंत्री द्वारा एडवांस डायबिटिक सेंटर का भी शिलान्यास किया गया, जिससे एडवांस ऑप्थामालॉजी भवन के तीसरे और चौथे तल पर निर्मित किया जाएगा, जहां मधुमेह केरोगियों को एक ही छत के नीचे सभी संबंधित व्याधियों के उपचार की सुविधा प्रदान की जाएगी जैसे आंख की जांच एवं डायबिटिक फुट का उपचार भी इसी केंद्र में किया जाएगा।

संख्यान परिसर में डॉक्टरों के लिए भोजनालय भवन का उद्घाटन किया गया, जो प्रातः 7:00 बजे से रात्रि 12:00 बजे तक खुला रहेगा। रेजिडेंट डॉक्टरों के लिए बने दो मंजिला भोजनालय भवन में 188 व्यक्तियों के बैठने की सुविधा प्रदान की गई है, जिसमें भूतल पर 76 व्यक्तियों व प्रथम तल पर 112 व्यक्तियों के लिए भोजनालय का प्रावधान है। द्वितीय तल पर रसोई भंडार कक्ष की व्यवस्था की गई है।

न्यू डायग्नोस्टिक ब्लॉक के भूतल एवं बेसमेंट में ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग द्वारा अपनी निम्नलिखित सेवाएं प्रदान की जाएंगी।

- अत्याधुनिक रक्त दान सुविधा
- Donation apheresis platelets, प्लाज्मा फेरेसिस एंड कन्वलसेंट
- पोस्ट डोनेशन क्लीनिक
- अस्थिमज्जा स्टेमसेल प्रत्यारोपण के लिए रक्त किरणों के लिए स्थान
- आधान संचरित संक्रमणों की जांच के लिए उन्नत प्रयोगशाला
- स्नातकोत्तर की परीक्षण के साथ-साथ राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के लिए संगोष्ठी एवं शिक्षण कक्ष



released by the Director Prof R K Dhiman *Dr. Sara* of the department, who designed the cover page of book was also honoured.

The department planted ten trees in SGPGI campus The program ended with the Vote of thanks proposed by *Dr. Sabaretnam M.*

- स्नातकोत्तर के परीक्षण के साथ-साथ राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण प्रयोगशाला
- उन्नत मॉलिक्यूलर प्रयोगशाला
- रक्त भंडारण के लिए कोल्ड रूम की सुविधा
- विभागीयभंडार

प्रथम तल पर पैथोलॉजी विभाग की एडवांस मौलिक्यूलर पैथोलाजी लैब व विभाग का सेमिनार कक्ष बनाया गया है। दूसरे व तीसरे तल माइक्रो बायोलॉजी विभाग का को प्रदान किया गया है जहां दूसरे तल पर पैरासाइटोलॉजी, माइकोलॉजी व टयूबर कुलोसिस लैब का कार्य होगा। तीसरे तल पर पूर्ण समर्पित कोविड लैब होगी जहां कोविड संबंधित परीक्षण लगाए जाएंगे।

संस्थान में इन सभी सुविधाओं का लोकार्पण करते हुए माननीय मंत्री श्री सुरेश खन्नाजी ने कहा इन सब सुविधाओं के साथ संस्थान निरंतर प्रगति करेगा ऐसी हम सब आशा करते है, किंतु हम यही चाहते हैं कि संस्थान के प्रत्येक डाक्टर और स्टाफ कारोगी के प्रति व्यवहार अत्यंत सौहार्द पूर्ण और ममत्व से भरा हो। साथ ही इस ऊंचाई पर पहुंचने के बाद संस्थान अपनी प्रगति को संभाल पाए और उसे बरकरार रख पाए, ऐसी भी हम आशा करते हैं।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार की राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती स्वाति सिंह जी, राज्य सरकार के राज्य मंत्री चिकित्सा शिक्षा व प्रशिक्षण श्री संदीप सिंह जी, संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर के धीमन, अपर निदेशक श्रीमती शुभ्रा सक्सेना एवं मुख्य चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर गौरव अग्रवाल भी उपस्थित थे।

"Use Heart to Connect" : UP Chapter- Cardiological Society of India (UP-CSI) at the forefront

To mark the occasion of the World Heart Day, the UP Chapter Cardiological Society of India along with the department of Cardiology, Sanjay Gandhi PGIMS, organized a 5 KM walkathon on 26th September 2021 at the SGPGI campus. The event was flagged off by **Prof Satyendra Tewari**, President UP Chapter Cardiological Society of India, **Prof Aditya Kapoor**, Head, Dept of Cardiology, **Prof Sudeep Kumar**, Secretary, UP-CSI, **Prof Anil Agarwal**, Head, Dept of Anesthesiology, **Prof Rajan Saxena**, Head, Dept of Gastrosurgery, and **Prof Gaurav Agarwal**, CMS, Dept of Endocrine Surgery. **Prof Naveen Garg**, **Dr. Roopali Khanna** and **Dr. Ankit Sahu** were the other faculty members of Cardiology Department who participated actively in the program Nearly 75 faculty members along with their family members attended this "Walk For Your Healthy heart"



event which was held to mark the World Heart Day that falls on 29th September 2021. Cardiovascular diseases including heart attacks and hypertension are the most common cause of death globally as well as in India and their rising numbers especially in the younger population is a cause for concern. Important modifiable causes of these diseases, which people can themselves change, are: lack of exercise, smoking, and an unhealthy diet. Since the theme of the World Heart day this year is "Use Heart to Connect" it is important we connect with our own hearts and make sure that we are fuelling, nourishing and nurturing our hearts to the fullest . Events like the SGPGI Walkathon help increase awareness about maintaining a fit lifestyle by including heart-healthy physical activities like walking, jogging, running etc. in one s daily regime and also pay attention to a balanced and wholesome diet.



The UP-CSI also organized an illumination ceremony at the iconic Roomi Darwaza to commemorate the World Heart Day .The function was attended by the Executive members of the UP-CSI led by President UP-CSI, **Prof Satyendra Tewari**, Secretary UP-CSI, **Prof Sudeep Kumar**, Vice president UP-CSI **Prof Naveen Garg**, **Prof Aditya Kapoor**, HOD ,Cardiology, SGPGIMS and **Prof SK Dwivedi**, HOD Cardiology, KGMU .

The society also organized a **health awareness Cyclothon** on 29th September morning at 6.00am ,that started at 1090 Chauraha Selfie point and finished at 1090 Chauraha Parag booth. The Cyclothon included avid cyclists from the Lucknow Pedalyatri group who were wearing World Heart day T-shirts specially designed for the occasion and were awarded participation mementoes after the program .An interactive public awareness session was also organized on this occasion.



CPR saves precious lives: Train for the moments that matter

Suraksha aapki, Sankalp humaara: This motto of the Uttar Pradesh police is truly what brought the UP police and doctors together on 27th September 2021 as part of an online Awareness and Training Workshop on Sudden Cardiac Arrest for the UP police.

The program was performed under the guidance of *Prof Aditya Kapoor*, Head, Dept of Cardiology, Sanjay Gandhi PGIMS and *Prof Sudhnashu Dwievdi*, Head, Dept of Cardiology, KGMU, Lucknow under the aegis of iCARE (Cardiac Arrest Resuscitation for Everyone), Mumbai.

Why are such programs needed: Even in countries like USA, nearly **356,000 out-of-hospital cardiac arrests** occur annually and approximately 90% of them are fatal, especially when un-witnessed or at home. In India too, heart disease remains an important cause of death and nearly 2 Million in the country per year die suddenly at home or at public places due to "Sudden cardiac arrest." In order to save the victims of SCA, timely Cardio Pulmonary Resuscitation (CPR) needs to be started as soon as possible and within the first three minutes of collapse of the victim. All over the world, police personnel are trained for bystander resuscitation since they are in close proximity to the public at all times and are best suited to provide immediate assistance that is the paramount need of the hour in such cases.

Addressing the gathering, *Shri Mukul Goel*, DGP in his address welcomed this initiative and emphasized that being first responders, every Police person should mandatorily be well versed with the perils of cardiac arrest and should receive training in CPR. He reiterated his firm belief that by learning medical first aid procedures and bystander CPR, police personnel can not only help civilians in case of a sudden cardiac arrest outside a hospital, but also protect their own

families and loved ones. He also added that more such programs should be carried out across the state of UP, in the days to come.

Dr Kinjal Goyal a Health Psychologist from Pune who anchored the program informed the audience about the initiative and efforts of iCARE in taking CPR training to various police forces across India. She highlighted the fact that training Police Personnel in this life saving skill not only ensures that they respond rapidly as the first responders and make genuine efforts to resuscitate the person, but also sensitises them to what CPR is and defines their own role in the moment when a bystander attempts CPR on a cardiac arrest victim.

Prof Aditya Kapoor elaborated on the urgent

need of such programs by informing the audience that heart disease is one of the most important causes of death in India today. Although SCA victims CAN BE SAVED by bystanders ,such victims often do not survive due to zero public awareness and knowledge on how to handle such emergencies. Every 1 minute delay in initiating life saving measures by bystanders decreases the chances of survival by 10%. He described this as a landmark effort not only because it was the first endeavour of its kind organized on such a magnitude in UP, but also emphasized that it would be a trend-setter and cascade into a series of more such programs all over Uttar Pradesh in the coming months.

Online training and Automated External Defibrillator (AED) training was provided by *Ms. Sumaiya Raghavan*, Operations Head, iCARE and *Mr. Anand Shrivastav*, Project Director, iCARE.

In the end, *Prof Sudhanshu Dwivedi* thanked Shri Mukul Goel, DGP, UP Police for spearheading this initiative and taking the lead to help organize this important activity with UP police. He also thanked the iCARE team and all attendees and hoped that this was the first in a series of more such programs to disseminate knowledge about bystander CPR across the cadres of UP police.

The program had an overwhelming attendance on the online platform with attendees logging on more than 500 zoom terminals. The live feed was available on you-tube <u>https://www.youtube.com/channel/UC7q-dXs2NgA</u> <u>Fxjlq6IPiuQQ</u> and was tweeted to over 1 million followers of the official UP police tweet handle <u>https://twitter.com/uppolice/status/1442453418056957954?s>21.</u>



- SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter

Obituaries

In the passing away of *Professor Chunni Lal Khetrapal* in the morning of July 21, 2021 India has lost a brilliant scientist and world renowned authority of liquid crystal matrices of Nuclear Magnetic Resonance (NMR) molecules, a dedicated teacher and a great human being.



Born on 25th Aug 1937, he studied

science at the Allahabad University ;in the year 2001 also served as the Vice Chancellor of his own Alma Mater After obtaining master's degree in Chemistry at the Allahabad University, he completed his Ph.D. at the Tata Institute of Fundamental Research Mumbai in the year 1965 followed by post-doctoral studies at Basel, Switzerland. He returned to India in 1973 to join Raman Research Institute, Bangalore. In the year 1977 he established "Sophisticated Instrument Facility", the first superconducting magnet based NMR in



I was privileged to join the Dept of Surgical Gastroenterology in Jan 1989 as the first batch of senior residents. The department had just started taking its baby steps under the guidance of two dynamic young faculty members *Dr. Rajan Saxena* and *Dr. VK Kapoor.* We were allotted six beds in the general hospital and

another six in the main building. It was still a service department, more of a subsidiary to Medical Gastroenterology, that was already functioning in full strength in terms of faculty, beds and academics (DM course). A year later Dr S P Kaushik joined as Professor and Head, ushering a new dawn for the beleaguered department that has since then, never looked back. Popularly known as 'SPK' in the campus, 'Kaushik sir' by us and 'Satyen' by his colleagues, Prof Satyendra P Kaushik was born on 18th April 1939 in Meerut . A medical graduate from Lucknow University in 1961, he moved to UK and completed FRCS in the year 1967. Back in India he joined JIPMER Pondicherry (1968) and subsequently PGIMER, Chandigarh (1972-1990). Having made his mark as a great surgeon and a great teacher during his two decades of stay at Chandigarh he moved to SGPGI, Lucknow in 1990. He was married to his colleague Dr.Soma in 1962 who professionally complemented him as anaesthetist in Chandigarh as well as Professor and Head of anaesthesia in SGPGIMS. He was instrumental in starting the first ever MCh program in SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter —

India at the Indian Institute of Science Bangalore. In the year 2001, we, at the Sanjay Gandhi Postgraduate Institute Lucknow invited him to establish Center of Biomedical Research (CBMR) of which he was the founding Director. He was invited twice during 1979 and 1984 as a Visiting Scientist at the National Institutes of Health, Bethesda, United States. He extensively published his research in the peer reviewed journals and also contributed significantly in the publication of 8-Volume Encyclopedia of Nuclear Magnetic Resonance. He founded National Magnetic Resonance Society and was installed as the founding President of society. He was awarded Shanti Swarup Bhatnagar award in 1982.

Dr Khetrapal is survived by his most gentle and soft-spoken wife Smt. Shashi Khetrapal and his sons Subhash and Munish Khetrapal. In him we have lost a dedicated scientist, prolific writer, an astute administrator and a great human being.

Dr. Mahendra Bhandari (Former director SGPGIMS and Professor and Head of Urology)

Surgical Gastroenterology in 1991 on national basis. The department has since grown by leaps and bounds creating a distinct foot print of its own in the national as well as international arena. He himself was an acclaimed surgeon of the upper gastrointestinal tract, credited to be the pioneer of 'highly selective vagotomy' in India .He was a visionary in true sense who would encourage his juniors to focus on specific areas like hepatobiliary, colorectal, upper GI and laparoscopic surgery because he could foresee subdivision of the GI surgery into these subspecilities in the days to come. It did not take us too long to realise how correct he was. On the professional front we as residents, loved to be with him in the operation theatre, not that we would see some great surgery but for the fact that he would invariably pass on the surgery to us with an advice "Bete, go nice and easy... I am sitting in my office...call me if any difficulty". On the academic front to his credit he himself had more than a hundred publications in various national and international journals. He had an uncanny knack to make any article (hat we wrote) publishable .He always believed in the honesty of data and convinced us that one does not have to inflate the figures to make an article publishable During his stint the department could boast of at least a dozen publications every year in some credible national and international journals .He took voluntary retirement in the year 2000 and joined a corporate hospital in New Delhi Having been an institute man all his life in no time he got disillusioned by the 'rules' of corporate practice It was no surprise that within a few months he quit this job and did a 'ghar wapsi' to Chandigarh medical college

Obituaries

as Professor of surgery from where he superannuated. After a brief spell of illness he passed away on 3rd August 2021. My last personal interaction with him & possibly his last public appearance, was as Chief guest in the Annual conference of the Indian chapter of IHPBA (attached photograph), held at Bhubaneswar in January 2020. In the alumni meet that evening he distributed a small aesthetically packed silver coin in a small glass case, to each one of us, as if to tell us "if I am

Seema Martin Paul, an eminent and extremely talented staff nurse in the department of paediatric surgery, SGPGI, Lucknow passed from this life into eternal life on 14th September 2021 at SGPGI Lucknow.

She joined the Institute on 19th February 2014, One of the most gentle and most committed staff nurses of the Institute. She was soft spoken, humble and down to earth by nature, wearing a beautiful smile all the time.

She was extremely honest and committed towards patient care with empathy and kindness. She won the hearts of everyone who knew her by her sweet gestures and friendly behaviour. She never said no to adjust duty to help her colleagues even after a hectic shift. She



not there tomorrow - ye tumbe meri yaad dilayegi". A great surgeon, a perfect mentor and an amazing human being, Kaushik sir will always remain etched in our memory and be a guiding force for generations to come.

Dr. Mohammad Ibrarullah, Senior consultant, Surgical Gastroenterology, Apollo hospitals, Bhubaneswar (Alumni) SGPGI 1989-1995

had done three times covid duty and during her 3rd duty she got covid positive

She maintained a beautiful relationship with all the colleagues and every other staff in the institute irrespective of their positions or post.

She was a pleasant soul who made smile on everyone's face in the middle of sufferings.

She was equally active in academic and spiritual activities and was on the track to complete her first year of graduation in Post Basic BSc Nursing from IGNOU

As a colleague and a wonderful human being, our heart bows to her immortal memmories may she find eternal joy and peace....

May almighty shower strength on her family to cope with this irreparable loss.

Sree Kumar, Staff Nurse Grade 2 Pediatric Surgery

स्मृति शेष

संस्थान परिवार के इन सदस्यों के असामायिक निधन से सब शोक संतृप्त हैं व परमपिता परमात्मा से हमारी प्रार्थना हैं कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और इनके परिजनों को इस आधात को सहने की शक्ति प्रदान करे।

श्री चेतराम माली ग्रेड-1 हार्टिकल्चर 22.08.2021 श्री सुधीर कुमार शुक्ला अटेंडेंट ग्रेड-1, एपेक्स ट्रामा सेंटर 12.09.2021



न अग्नि, न वायु, न जन्म और न मृत्यु हमारे अच्छे कर्मों को मिटा सकते हैं। –बुद्ध

फायर ड्रिल के संबंध में सूचनार्थ मुख्य अस्पताल भवन में दिनांक 09.07.2021 को सायं 2.30 बजे वार्ड ब्लॉक के पीछे फायर आफीसर उoप्रo अग्नि शमन सेवाएं पीoजीoआईo लखनऊ द्वारा पहली बार ग्राउण्ड फायर ड्रिल का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत कृत्रिम आग लगाकर नवी मन्जिल की छत से फायर रेस्क्यू करते हुए, आग पर काबू करने के साथ-साथ आयोजित फायर ड्रिल में उपस्थित कर्मियों को आग लगने के कारण, आग के प्रकार व आग के आधार पर उपयोग किये जाने वाले अग्नि शामकों के विषय में भी जानकारी दी गयी।

> श्री पी. सी. गुप्ता, अधियाशी अभियंता इलेक्ट्रिकल



SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter

Farewell





संस्थान परिवार में अपने कार्यकाल को बखूबी लगन और मेहनत से निभाकर, अनेक सदस्य अपने पद के दायित्वों से मुक्त हुए। निदेशक महोदय की उपस्थिति में सभी को उनके अंतिम कार्यदिवस पर सम्मानित किया गया। ये सभी निम्नलिखित सदस्य अपनी कर्मठता और संस्थान के प्रति

योगदान के लिए अविस्मरणीय रहेंगे । श्री इंद्रजीत सिंह कनि

श्री अशोक कुमार यादव सिस्टर मधू श्री नत्थी सिंह श्री जंगबहादुर सिंह श्री अमृतलाल श्री हरीश चन्द्र यादव श्री शीलेन्द्र पाल सिंह श्री वासूदेव यादव श्री हरीश चन्द्र कनौजिया श्रीमती मधु अगस्टीन श्री सुभाष खेरूका श्री अवधनारायण मिश्रा श्री ईश्वर चंदनवानी श्री रामचरण चौधरी डा० विवेक आंनद सारस्वत डॉ पी के गोयल श्री दिनेश कुमार त्रिपाठी श्री चंद्रभाल अवस्थी

कनिष्ठ लेखाधिकारी कार्यालय अधीक्षक नर्सिंग अधीक्षिका वरिष्ठ कुक टेक्निकल ऑफीसर प्रवर वर्ग सहायक बियरर मशालची ग्रेड-2 सीनियर आपरेटर वरिष्ठ माली हास्पिटल अटेंडेंट ग्रेड-2 नर्सिंग अधीक्षक साइंटिस्ट (वी आर एस) अटेंडेंटग्रेड-1 ए एस पी ओ तकनीकी अधिकारी प्रो० एंड हेड गैस्ट्रोएंट्रोलॉजी प्रो० एंड हेड, कार्डियोलॉजी चीफ इलेक्ट्रीशियन ड्राइवर ग्रेड-1



























SGPGIMS, July - September 2021, Newsletter-

Farewell

Professor Vivek A. Saraswat, MD DM, the former Head, Department of Gastroenterology, SGPGIMS, Lucknow, superannuated on 30.09.2021. He served the institution for 37 years. He received his training in New Delhi at MAMC (MBBS 1978), AIIMS (MD 1983, MD 1986) and abroad, at Queen Elizabeth Hospital, Birmingham (1994-95), and Kings College Hospital, London, (2002), besides completing short fellowships in biliary ESWL at Salzburg, Austria (1992) and in esophageal manometry and pH metry at Leuven, Belgium and Guy s Hospital, London, UK (1989).

Prof. Saraswat joined the Department of Gastroenterology in 1988 as Assistant Professor. He served the Department of Gastroenterology as Head from 2012 to 2021.

He has received many prestigious awards and oration such as Professor S. R. Niak award by the Indian Society of Gastroenterology, Dr. P. N. Chuttani Oration, Dr. N. Madangopalan Oration. He also served as honorary secretary and president of Indian Gastroenterology (INASL).

The Department of Gastroenterology currently headed by *Prof Uday C Ghoshal* gave a grand farewell to him on his superannuation that was also attended by *Prof R K Dhiman* the Director of the Institute .



Prof P K Goel s glorious 32 years tenure at SGPGIMS concluded on 31st August 2021. He joined this institute as a faculty member in 1989 and then went on to do 1 year training in Interventional Cardiology from New Zealand in 1990. He took over the mantle of headship in 2010, and under his headship, the department



made huge strides in patient management and teaching, with 11 batches of DM students passing out during this period. Under his leadership, he brought national and international recognition to the department in Interventional Cardiology with many Live transmissions in various meetings nationally and internationally. Department of Cardiology performed its first International live case demonstration to the USA in June 2012. He performed the first Percutaneous Aortic Valve Implant (TAVI) in the Government Sector of the Country and 1st in U P on 4th Feb 2016, thus starting a new chapter of adult structural interventions .We have performed about 25 cases of TAVI since then .With his particular interest and expertise in chronic total occlusion CTO jintervention ,he added a new dimension to the Department of Cardiology.

Along with being a great clinician, he was also a great teacher. He was a keen follower of the Green Lane System of coronary angiography interpretation and taught the same to his students. He had a great interest in teaching angiographic interpretation to residents.

He has been recognized by several international societies and has been conferred with 2 fellowships. He has also delivered several orations and invited talks at various national and international conferences. He also contributed significantly to the field of cardiology with more than 110 research publications in various national and international journals and 6 book chapters.

As a tribute to all his contributions, the Department of Cardiology gave him a warm farewell and will always hold him in high esteem. Though his tenure at SGPGIMS has come to an end, his contributions will be everlasting.

Awards and Accolades

Appreciation and recognition are powerful motivators leading to an increase in **performance**, **productivity**, **morale and overall satisfaction**.

Institutional Ethics Committee (IEC) of Sanjay Gandhi Post Graduate Institute of Medical Sciences has successfully completed the survey **National Accreditation Board for Hospitals & Healthcare Providers** (NABH) and has been awarded **NABH accreditation**. SGPGIMS is one of the few in the country and the only center in UP to get this accreditation. SGPGIMS, IEC performs as per the National guidelines and the Drug and Clinical Trials Rules of the Govt. of India. This has been possible with the support from the *Director, Professor R K Dhiman* and consistent efforts of all including Chairman *Dr Chandishwar Nath* Member Secretary *Professor Vinita Agrawal* members of the committee and the staff of Bioethics Cell SGPGIMS .

SGPGI has one of the oldest IEC which was constituted in 1988. With the contribution of many people including previous chairman, Late *Professor BN Dhawan* the IEC has maintained a rich tradition of following guidelines and upholding the interests and safety of participants. About 350 projects including clinical trials are reviewed each year. The IEC, SGPGIMS has also received international recognition and has been awarded consecutively three times with the prestigious award from **International Forum for Ethical Review Committees in Asia and the Western Pacific Region (FERCAP)** in 2011, 2015 and 2018.

The IEC has its own SOPs (Standard Operating Procedures). The members of IEC are aware and trained to follow the guidelines for proper functioning of the IEC.



'Mission Shakti Award'

On 21st August 2021, during the launch of the third phase of Mission Shakti, *Professor Vinita Agrawal*, Department of Pathology and *Mrs Minimole Abrahim* \$ister grade I were awarded 'Mission Shakti Award' by the Honorable Governor of UP, *Mrs Anandiben Patel* in presence of Chief Guest, Union Minister, *Mrs Nirmala Sitaraman*, and Chief Minister of UP, *Shri Yogi Adityanath*.



COVID warrior as Health ICON

Dr. Zia Hashim, Additional Professor, Pulmonary Medicine, SGPGIMS was awarded the **ICONS of Health Award** for working as ICU Incharge, Rajdhani Covid Hospital. An extremely softspoken person, Dr Zia is known for his dedication, diligence and practical application of medical knowledge in critically ill



Dr Abhijeet and *Dr Shivani* Senior Residents from the Department of Neonatology brought laurels to the department by winning the third prize in oral award paper category and second prize in free paper category in Central zone UP Neocon, held in Meerut on September 25 and 26,2021

Dr.Sabaretnam Mayilvaganan Associate Professor of Endocrine surgery has become the Vice president of Association of Surgeons of Rural India

Award Received for effective implementation of Ayushman Bharat at SGPGIMS



Ayushman Bharat Pradhan Mantri Jan Arogya Yojana is a national public health insurance fund of the Government of India that aims to provide free access to health insurance coverage for low-income earners in the country. The AB-PMJAY scheme has been successfully implemented at SGPGIMS under leadership of *Prof. R.K. Dhiman*, Director & under guidance of *Prof. Gaurav Agarwal*, CMS, SGPGIMS.

Govt of U.P., while commemorating three years of successful implementation of **'Universal Health Coverage'** scheme, Ayushman Bharat in the state of Uttar Pradesh under which primary health care specified secondary and tertiary health care benefits are provided, has awarded SGPGIMS for its unparalleled contribution in the implementation of AB -PMJAY SGPGIMS has been awarded by Hon ble Cabinet Minister, Medical and Health, Family Welfare, *Shri Jai Pratap Singh* wherein *Dr R. Harsvardhan*, Nodal Officer Ayushman Bharat, received the award for SGPGIMS on 26.09.21 for effective implementation of services of Ayushman Bharat at SGPGIMS during an event organized by SACHIS.

Dr R. Harsvardhan stated that more than 1700 beneficiaries is have been benefitted under Ayushman Bharat at SGPGIMS in last one year and he also suggested to include medical unspecified package as well as rare surgery/procedure being performed frequently at SGPGIMS and they must be included in upcoming HBP 2.1 to get broad coverage and benefit to ensure Universal Health Coverage.

Ayushman Bharat Team of SGPGIMS consists of *Prof Gaurav Agrawal* CMS *Dr R. Harsvardhan* Head Hospital Administration *Dr Saurabh Singh Dr K. D. Singh*, Senior Resident Department of Hospital Administration)*Dr Lata Tripathi*, *Dr Pallavi Mehra*, *Dr. Dinank Patel* PG -HA)Arogya Mitra *Mr. Saurabh Verma* and *Mr. Anshu Verma* have contributed remarkably to the services . Apart from them the officers *Shri D.C. Shrivastava*, *Mr. Vivek Sahgal* and *Mr R.C. Bajpayee* from Hospital Accounts play key role in fund management while *Mrs Manju Verma*, supervises main AB PMJAY Counter at PMSSY Block, SGPGIMS .



Prof R. K. Dhiman, Director congratulated the team and reiterated that SGPGI will continue to do its best in expanding coverage of beneficiaries under AB PMJAY scheme

Published by: Prof. R.K. Dhiman, Director, SGPGIMS, Lucknow Editorial Board: Chief Editor: Dr. Prerna Kapoor Members: Dr. Anu Behari, Dr. Shantanu Pande, Dr. Ankur Bhatnagar, Dr. Rahul Katharia, Dr. Khaliqur Rahman, Ms. Neema Pant, Ms. Kusum Yadav Photographs: Mr. Anil Kumar Secretarial Assistance: Mr. Deepak Chandra, Mr. Rishi Misra

Office Attendant: Mr. Sunil Kumar E-Mail:newslettersgpgi@gmail.com Designed & Printed by: Education Foundation of SGPGI, Lucknow